हुडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

त्रिकुटा

प्रथम अंक 2025

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि.
(भारत सरकार का उपक्रम)

हुडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू की ई-गृह पत्रिका ''त्रिकुटा''

संरक्षक एंव मुख्य संपादक
डा. दीपक बंसल
क्षेत्रीय प्रमुख

संपादक
श्री शाम लाल
प्रबंधक (प्रशासन)/
नोडल अधिकारी (राजभाषा)

सह संपादक एंव परिकल्पना
श्रीमति पूर्णिमा भट्ट
प्रबंधक (प्रशासन)/
नोडल सहायक (राजभाषा)

मुख्य पृष्ट फोटो गूगल के इस लिंक (https://in.pinterest.com/pin/maa-vaishno-devi-temple-images-photos-and-pictures-free-download--824018063058437244/) से लिया गया है।

अनुक्रमणिका (INDEX)

विषय / शीर्षक	पृ. सं.
संदेश	1–4
सम्पादकीय	5
हडको के 54 वां स्थापना दिवस का आयोजन	6–7
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन	8–9
एक पेड़ माँ के नाम	10–12
कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सी एस आर)	13–14
कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सी एस आर) के अंतर्गत योग पर जागरूकता कार्यक्रम	15–17
क्षेत्रीय प्रमुख लेख **"जाफना (श्रीलंका) इलाके में पचास हजार घरों के निर्माण में हडको का योगदान"**	18–19
कविता सहर और सफर (कॉपी राईट का अधिकार कवि के पास है)	20–21
वरिष्ठ चालक लेख मृत्यु क्यों आवश्यक है ?	22–23
जम्मू और कश्मीर के किश्तवाड़ हाई एल्टीट्यूड नेशनल पार्क में हिम तेंदुओं की खोज (कॉपी राईट का अधिकार लेखक के पास है)	24–27
हडको (सी एस आर) के अंतर्गत जम्मू व कश्मीर में वाटर कुलर लगाने की रिपोर्ट	28–29

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय, हडको द्वारा अपनी गृह पत्रिका "त्रिकुटा" के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । गृह पत्रिकाएं समकालीन विचारणीय विषयों की प्रस्तुति मात्र ही नहीं होती, वरन् भावी प्रगति की पूर्व पीठिका का कार्य भी करती हैं। यह गौरव की बात है कि "त्रिकुटा" के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय गत वर्षों से भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अनुसरण करता रहा है ।

राजभाषा के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ-साथ जम्मू एवं कश्मीर राज्य के विकास में जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय कई वर्षों से विभिन्न योजनाओं में वित्त पोषण के माध्यम से अहम भूमिका निभाते हुए अपना संपूर्ण योगदान दे रहा है ।

मैं जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों तथा पत्रिका के संपादक मंडल को इस ज्ञानवर्द्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

यह गौरव एवं प्रसन्नता की बात है कि जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय, हडको द्वारा अपनी गृह पत्रिका "त्रिकूटा" के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, इसका सम्मान करते हुए हमें अपने काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना चाहिए ।

हिंदी गृह-पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अभिव्यक्तियों व उनके हिंदी उपयोग को दूसरों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । हिन्दी को आत्मीय भाव से अपनाने में राष्ट्र प्रेम का भाव जागृत होता है । राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में किए जा रहे अनेक प्रयासों में हिंदी गृह-पत्रिकाएं अहम भूमिका निभाती हैं ।

आशा है कि भविष्य में भी इस तरह के प्रयास जारी रहेंगे । पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहयोगी सभी रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

शुभकामनाओं सहित,

एम नागराज
निदेशक कॉर्पोरेट (प्लानिंग)

संदेश

सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और उसे समृद्ध करने के उद्देश्य से जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय, हडको द्वारा राजभाषा ई-पत्रिका "त्रिकुटा" के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । यह एक सराहनीय प्रयास है ।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु हमें सदैव सृजनात्मक कार्य करते रहना चाहिए ताकि जीवन ऊर्जामय और आनंदमय बना रहे । मैं आशा करता हूँ कि गृह-पत्रिका के ई-संस्करण से हिन्दी का प्रसार एवं प्रभाव दोनों ही बढ़ेंगे तथा भारत सरकार की मितव्ययता नीति को भी बढ़ावा मिलेगा । जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय इस सराहनीय प्रयास के लिए बधाई का पात्र है ।

शुभकामनाओं सहित ,

दलजीत

दलजीत सिंह खतरी
निदेशक (वित्त)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय हडको, की हिन्दी गृह पत्रिका "त्रिकुटा" के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय, हडको द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया जाना सराहनीय कार्य है । पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के सभी कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर तो मिलता ही है , साथ ही सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के प्रति उनकी रुचि भी बढ़ती है ।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई ।

शुभकामनाओं सहित ,

विनीत गुप्ता

विनीत गुप्ता
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

सम्पादकीय

हडको के गृह पत्रिका के प्रथम अंक "त्रिकुटा" को आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह हमारा पहला प्रयास है, जो कि नए आयामों, और हिंदी में रचनाकारों को अपने साथ मिलाकर जारी रहेगा। राजभाषा हिंदी को विकसित करना और सरकारी कामकाज में इसका अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा राष्ट्रीय, प्रशासनिक एवं नैतिक कर्तव्य है। इस दिशा में हमारी "त्रिकुटा'' पत्रिका राजभाषा के उत्थान और प्रसार में अपना योगदान देती रहेगी। क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू का सौभाग्य है कि "त्रिकुटा'' के प्रथम अंक का प्रकाशन हो रहा है । मुझे आशा है कि इस प्रयास में सबका सहयोग, प्रेम और प्रोत्साहन इस पत्रिका को सदैव मिलता रहेगा है। मैं उन सभी लेखकों, रचनाकारों एवं उनके पारिवारिक सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने रंग–बिरंगी पुष्प रूपी रचनाओं एवं लेखों का समर्पण कर इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में अपना विशेष सहयोग दिया है । मुद्रित प्रति में सीमित प्रतियों के मुद्रण की बाध्यता है परन्तु इलेक्ट्रानिक्स प्रति के चलन में आ जाने से इसका क्षेत्र असीमित हो जाता है। इस पहल से किये गए कार्यों एवं श्रेष्ठतम उपलब्धियों की जानकारी हर जन–मानस तक आसानी से पहुँचा सकते हैं। इस संबंध में यहाँ उल्लेख करना उचित होगा कि हमारी त्रिकुटा पत्रिका इस कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की अनुभूति एवं अनुभवों को प्रतिबिंबित करने का माध्यम है। हमारे कर्मचारी/अधिकारी विभिन्न योजनाओं और परियोजना के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सक्रिय भूमिका निभाते हुए राजभाषा हिन्दी के विकास में बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करेगी और रचनाकारों के राजभाषा संवर्धन हेतु किए जा रहे प्रयासों की झलक भी इसमें देखने को मिलेगी। यह त्रिकुटा पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार प्रेम और प्रोत्साहन पा कर और नये रूप में निखर कर निरंतर प्रकाशित व प्रसारित होती रहेगी। इस पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों, रचनाकारों, सहयोगियों तथा संपादक मंडल को मेरी बहुत बहुत हार्दिक शुभकामनायें।

डॉ. दीपक बंसल
क्षेत्रीय प्रमुख जम्मू

हडको के 54वां स्थापना दिवस का आयोजन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू द्वारा हडको के 54वां स्थापना दिवस का समारोह जोन होटल रेलवे रोड जम्मू में मनाया गया। हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू के सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने परिवार सहित इस कार्यक्रम में शामिल हुए। इसके अतिरिक्त मुख्य अतिथि गण और जम्मू राज्य के विभिन्न सरकारी विभाग के वरिष्ठ अधिकारी गण इस स्थापना दिवस समारोह में उपस्थित हुए।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस दिनांक 21.06.2024 के अवसर पर जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय में योग दिवस मनाया गया जिसमें क्षेत्रीय प्रमुख डा. दीपक बंसल जी के मार्गदर्शन में समस्त स्टाफ ने योग की विभिन्न आसन किये एवं प्राणायाम एवं ध्यान के सत्र में भाग लिया और योग–साधना के महत्व को जाना। क्षेत्रीय प्रमुख ने सभी को नियमित योग करके स्वस्थ रहने का सुझाव दिया। योग से मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, इसे निरंतर करते रहने से रोग समीप नहीं आते हैं। "करो योग रहो निरोग" मंत्र पर दैनिक जीवन में अपनाने पर पुरजोर दिया।

INTERNATIONAL
YOGA DAY

एक पेड़ माँ के नाम

हडको मुख्यालय द्वारा जारी किये गये ज्ञापन "एक पेड़ माँ के नाम" दिनांक 05.07.2024 के अनुसार दिनांक 12.07.2024 को जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय ने प्रातः 10.30 बजे पहला पेड़ श्री राजीव शर्मा जी कार्यकारी निदेशक (परियोजना /प्रशासन) द्वारा लगा कर शुभारम्भ किया गया। उसके बाद दूसरा पेड़ माँ के नाम डॉ॰ दीपक बंसल जी क्षेत्रीय प्रमुख जम्मू द्वारा लगाया गया। उसके बाद तीसरा पेड़ माँ के नाम श्री संजीव चौपड़ा संयुक्त महा प्रबंधक (विधि) द्वारा लगाया गया। उसके बाद चौथा पेड़ माँ के नाम श्री भोमिक जैन सहा. महा प्रबंधक (परियोजना) द्वारा लगाया गया। उसके बाद पांचवा पेड़ माँ के नाम श्री पवन कुमार वरिष्ठ प्रबंधक (आई टी) द्वारा लगाया गया। इस तरह हडको जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारी / कर्मचारी जैसे कि श्री शामलाल, श्रीमती दपिंदर कौर, श्री सुखदेव कुमार, श्री परवीन कुमार और श्री अब्दुल गफ्फूर ने एक–एक करके माँ के नाम पर पेड़ लगाए। इसके बाद सब पेड़ों को पानी दिया गया और "एक पेड़ माँ के नाम" इस पेड़ लगाने के पुरे कार्यक्रम की फोटोग्राफी भी की गयी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने शपथ ली की वे पर्यावरण को बचाने के लिए भविष्य में भी पेड़ लगाते रहेंगें और अपने द्वारा लगाये गये "एक पेड़ माँ के नाम" की देख भाल करतें रहेंगें।

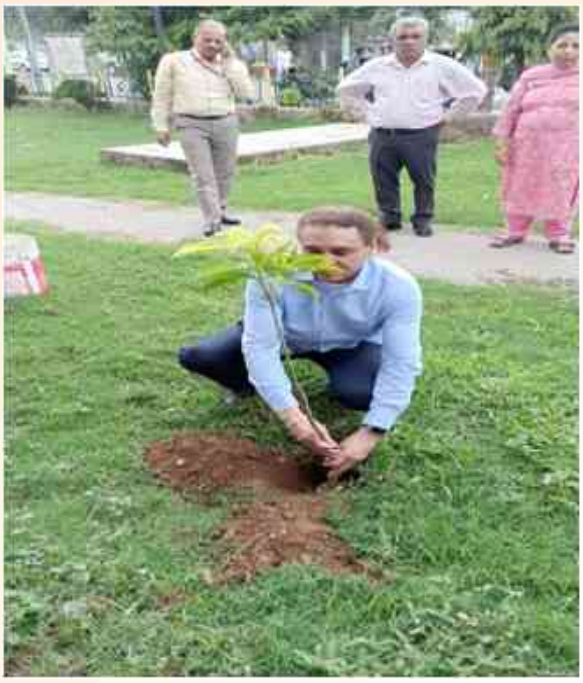

कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सी एस आर)

हडको ने कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सी एस आर) (Corporate Social Responsibility) के अंतर्गत बोर्डेर सुरक्षा बल (बी एस एफ) को जम्मू में तीन एम्बुलेंस दिये। इन एम्बुलेंस का उद्घाटन श्री राजीव शर्मा जी कार्यकारी निदेशक (परियोजना / प्रशासन) और डॉ॰ दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख हडको जम्मू द्वारा किया गया।

FLAG OFF CEREMONY

FLAG OFF CEREMONY

FLAG OFF CEREMONY

AMBULANCE

FLAG OFF CEREMONY

हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू

हडको सी एस आर के अंतर्गत योग पर जागरूकता कार्यक्रम

हडको मुख्यालय के परिपत्र क्रमांक हडको/सी.एस.आर./योगा डे /2024 दिनांक 20.06.2024 के अनुसार हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू द्वारा सी.एस.आर. के तहत दिनांक 22.07.2024 को पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय गाँधी नगर जम्मू में योग पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन प्रातः 08.30 पर किया गया। इस कार्यक्रम में हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों और केन्द्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य, अध्यापकों, अध्यापिकायों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। क्षेत्रीय प्रमुख हडको जम्मू डॉ. दीपक बंसल जी ने केन्द्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अमित वाल्टर जी के साथ सभी प्रतिभागियों और विद्यार्थियों का स्वागत किया और ज्योति प्रजव्लित कर योग कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

इस कार्यक्रम में केन्द्रीय विद्यालय के आठवीं और नौवीं कक्षा के लगभग 250 विद्यार्थियों, अध्यापकों, अध्यापिकायों और कर्मचारियों ने भाग लिया। योग शुरू होने से पहले हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू के अधिकारियों / कर्मचारियों द्वारा सभी विद्यार्थियों को योगा मैट और टोपी देकर योग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उसके बाद योग सत्र का संचालन योगा टीचर सुश्री लतिका दत्ता के द्वारा किया गया और सभी प्रतिभागियों और विद्यार्थियों से आसनों का नियमित अभ्यास करने के लिए अनुरोध किया गया ताकि विद्यार्थी अपने जीवन में शरीर, मन और आत्मा को संतुलित रख सकें।

अंत में सभी का ग्रुप फोटो लिया गया और प्रतिभागियों/विद्यार्थियों और केन्द्रीय विद्यालय के अध्यापकों, अध्यापिकायों और कर्मचारियों को हडको द्वारा पोष्टिक जलपान का वितरण किया गया और सभी को धन्यवाद प्रदान करते हुए योग कार्यक्रम का समापन किया गया।

जाफना (श्रीलंका) इलाके में पचास हजार घरों के निर्माण में हडको का योगदान

डॉ॰ दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख जम्मू

श्रीलंका में भारत सरकार द्वारा पचास हजार घरों के निर्माण कार्यों में हडको द्वारा इन मकानों की निगरानी (PMC) की गयी थी। इन मकानों को संयुक्त राष्ट्र–हैबिटैट (UN&Habitat) और श्रीलंका के राष्ट्रीय आवासीय विकास प्राधिकरण (NHDA) द्वारा बनवाया गया था। जिसमें हडको द्वारा इनकी गुणवत्ता और सुरक्षा सम्बन्धी निगरानी (Monitoring) की गयी थी। यह मकान जाफना क्षेत्र में जंगल वाले क्षेत्र में फैले थे। इन मकानों का कुर्सी क्षेत्रफल (Plinth Area) 550 स्क्वायर फीट प्रति मकान और लागत श्रीलंका रूपये पांच लाख पचास हजार (वर्ष 2012) में आयी थी। श्रीलंका का ये क्षेत्र चक्रवात/बाढ़ की दृष्टि से काफी संवेदनशील है। इसलिए इन मकानों में इससे सुरक्षा के लिए विशेष इंतजाम किये थे।

डिजाइन के हिसाब से इन घरों में लकड़ी/बांस/नारियल से छत की संरचना और नारियल के पतों से छत की कवरिंग (Covering) की जाती है, ये डिजाइन चक्रवात के लिए बहुत अच्छी नहीं है। परन्तु इसके सिवाय इस क्षेत्र में कोई अन्य निर्माण सामग्री इन कीमत पर उपलब्ध भी नहीं है। इन छतों को एन बी सी (National Building Code) के नियमों के हिसाब से बांधा गया था। इसमें छत के (Truss) को दीवारों के साथ–साथ आपस में क्रॉस (Cross) बांधा गया था। यह हडको की विदेश में की गयी पहली परियोजना थी। इसमें वस्तुवित्तों और संरचनाकारी अभियन्तों का योगदान रहा था, जिसमें उन्होंने इन भवनों की डिजाइन और PMC में हिस्सा लिया था। यह योजना भारत सरकार की JNNURM/PMAY से काफी समानता रखती थी। कुछ चित्र प्रस्तुत हैं।

सहर

यादों के घने और लंबे साये अक्सर हमारे
वजूद को अपने आगोश में समेट लेते हैं।

फकत याद हैं आज भी गेसूओं से छनकर
आती झिलमिलाती सुनहरी वो धूप,
जो रात की तनहाई में लिपट जाती
मुझ से चाँदनी बन खवाहिशों की चादर सी,
उनींदी आखें रात की पहरेदारी में देखती
हवा में उड़ते वो रंगबिरंगे ख्वाब।

हर सुबह फिर होती नई शुरुआत इसी मंजर की जुस्तजू में।

कहाँ था यकीं खुद को की मिलोगी–
उमस भरी शामों में खुशगवार हवा के झोंके की तरह,
सर्द सुबहों में गुनगुनी धूप की तरह,
और बरसते सावन में ठंडी बयार की तरह ।

यकीं करने को जी चाहता है अब यादों के
आगोश में ही अक्सर देखें जातें हैं
नामुमकिन से ख्वाब बस मुसलसल
कोशिश रहे न जाने कब सहर हो जाए।

मनोज मितल , नोएडा,
manoj_shelter@yahoo.com
कॉपी राईट का अधिकार कवि के पास है।

सफर

सफर में आँधियाँ बहुत थीं और आसमाँ था गरम ,
जमाने की नजरे भी तल्ख थीं हर पड़ाव था छलावा ,
और साये भी कहाँ मयस्सर थे ।

नाउम्मीदीयों में भी थके पाँव चलता रहा
हसरतों के साथ उन तन्हा रास्तों पर
बिखरे थे सपने जहाँ खाक में ,
मंजिलों की भी कहाँ पहचान थी ।

मिलें कुछ लम्हे सकून के और साये बहार के ,
तो लिखूँ फसाने प्यार के कहूँ तराने अपने खोए ख्वाब के ।

लंबे तन्हा और तल्ख सफर मे ख्यालातों की
हसीन दुनियाँ मे बुने कितने ही सपने ,
उम्मीदों ने एतबार कर कसकर थामी थी
मन की डोलती कश्ती ,
जैसे मांझी संभालता भंवर में फंसी अपनी कश्ती ।

ढूंढ ही लेता है मन उदासीयों में खुशी का सबब
और नाउम्मीदीयों में भी उम्मीदों का फलक ।
बेहद हसीन है मेरा ये सफर ।

मनोज मितल , नोएडा,
manoj_shelter@yahoo.com
कॉपी राईट का अधिकार कवि के पास है।

मृत्यु क्यों आवश्यक है ?

सुखदेव कुमार, वरिष्ठ चालक क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू

हर कोई मृत्यु से डरता है, लेकिन जन्म और मृत्यु हमें बनाने वाले का अपना एक नियम है, यह इसलिए जरुरी है, की यह सृष्टि का संतुलन बना के रखती है इसके बगैर एक आदमी दूसरों के ऊपर हमेशा अपना बर्चस्व बनाकर रखना चाहता है।

एक बार एक कपटी राजा ऋषि के पास गया, वह ऋषि एक पुराने बरगद के पेड़ के नीचे बैठा था, जो राजा के साम्राज्य का एक हिस्सा था। राजा ने ऋषि से पूछा की कोई ऐसी दवा या जड़ी बुटी है, जो मुझे अमरत्व दे सके, मेहरबानी करके मुझे बताओ? ऋषि ने उत्तर दिया की हे राजा आपके सामने ये जो पहाड़ है, इसको चढ़ने के बाद एक झील होगी, आप उसका पानी पी लेने से आपको अमरत्व की प्राप्ति हो जाएगी। राजा ने बड़ी जल्दी जल्दी पहाड़ की चढ़ाई की और झील के पास पहुँच गया।वह झील का पानी अभी पीने ही वाला था की झील में से दर्दभरी आवाज आई राजा ने सुना और देखा एक बहुत ही कमजोर आदमी दर्द से करहा रहा था। जब राजा ने उस आदमी से इसका कारण पूछा तो उस आदमी ने राजा को बताया की इस झील का पानी मैने भी पी लिया और मैं अमरत्व को प्राप्त हो गया। अब मेरी आयु एक सौ पच्चीस वर्ष के करीब है, मेरे घर वालों ने मुझे घर से निकाल दिया है, मैं लगभग तीस–चालीस वर्षो से यहाँ पर ऐसे ही पड़ा हुआ हूँ। मेरा कोई भी बच्चा मेरी देखभाल नहीं करता है, और अब मेरे बच्चें भी इस दुनिया को छोड़कर जा रहे हैं। अब मेरे पोते, दोते भी बूढ़े होने लग गये हैं, मैंने खाना और पीना छोड़ दिया है, पर अब भी मैं जिन्दा हूँ। राजा ने विचार किया फिर बुढ़ापे में अमरत्व का क्या लाभ। राजा फिर उसी ऋषि के पास गया और बोला मुझे कोई ऐसी दवा या जड़ी बुटी बताओ जो मुझे अमरत्व के साथ साथ मेरा यौवन भी खत्म ना हो। ऋषि ने कहा की झील के पार एक और पहाड़ है, आप उस पहाड़ को चढ़ कर जाओ, वहाँ पर एक वृक्ष होगा, उसका फल पीला होगा आप उसको खा लेना। जैसे ही राजा फल तोड़ने लगा उसने वहाँ पर जोर जोर से झगड़ने की आवाज सुनी, फल खाने से पहले उसने सोचा की मैं देख लेता हूँ की वहाँ कौन है।

तब राजा ने वहाँ देखा तो चार आदमी आपस में झगड़ा कर रहे थे। जब राजा ने उनसे झगड़े का कारण पूछा तो उन्होंने बताया की हमारी आयु 250, 300, 350 और 400 वर्ष के आस पास है, हमने ये पीला फल खाया हुआ है। हमारे झगड़े का कारण सम्पति है, झगड़े के कारण गाँव वालों ने हमें गाँव से बाहर निकाल दिया है। राजा ने कहा की आप अपनी सम्पत्ति बांट क्यों नहीं लेते, तब उनमें से एक आदमी ने बताया की मेरी आयु 250 वर्ष है, जो 400 वर्ष की आयु वाला आदमी है वह मेरा परदादा है। वह अपनी सम्पत्ति में से हमें कुछ भी नहीं दे रहा है, और कहता है की मेरे मरने के बाद सब कुछ आपका ही होगा। लेकिन ये अब मरेगा नहीं, क्योंकि इसने खुद भी ये पीला फल खाया और मेरे बाप और दादा को भी खिला दिया। इसलिए अब हमें से कोई भी मरेगा नहीं और ना ही हमें सम्पत्ति मिलेगी। यह सब सुनकर राजा बहुत परेशान हुआ और बिना फल खाए फिर उस ऋषि के पास आया और उस ऋषि का धन्यवाद किया की आपने बहुत अच्छा किया की मुझे मृत्यु की अहमियत बताई। इस दुनिया में अगर मृत्यु है, तो ही प्रेम है अगर मृत्यु नहीं होगी तो प्रेम इस दुनिया में होगा ही नहीं। उपरोक्त लेख में से हमें एक गहरा सन्देश ये मिलता है कि हमें अपने कर्म साफ सुथरे रखने चहिये और ना की चुगल खोरी, छल कपट, बेईमानी, व्याभिचार और वर्चस्वादी सोच को त्याग कर सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिए। क्योंकि हम में से कोई भी यहाँ का स्थाई निवासी नहीं है, इसलिए अपने व्यवहार में मानवता के लिए हमें परिवर्तन करना होगा, नहीं तो अपने बुरे कर्मों का दंड भुगतने के लिए तैयार रहना है। यह पक्का है आप के द्वारा किये गये बुरे कर्मों का दंड आप को जरुर मिलेगा, तब आपको कोई नहीं बचा पाएगा, इसलिए अपने कर्मों के प्रति सजग रहें।

जम्मू और कश्मीर के किश्तवाड़ हाई एल्टीट्यूड नेशनल पार्क में हिम तेंदुओं की खोज

डॉ. पंकज चंदन (pankajchandan@gmail.com)
वरिष्ठ प्रकृति संरक्षण वैज्ञानिक,
हिमालयन फाउंडेशन फॉर कंजर्वेशन लीडरशिप
(कॉपी राईट का अधिकार लेखक के पास है)

किश्तवाड़ हाई एल्टीट्यूड नेशनल पार्क (KHANP) पश्चिमी हिमालय में एक छिपा हुआ रत्न है, जो अपने ऊबड़–खाबड़ इलाके, प्राचीन परिदृश्य और समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है। जम्मू और कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में बसा यह पार्क कुछ सबसे लुभावने अल्पाइन और उप–अल्पाइन पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करता है। किश्तवाड़ हाई एल्टीट्यूड नेशनल पार्क 2190.50 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है, जो स्तनधारियों और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों को प्राकृतिक आवास प्रदान करता है। पार्क की ऊँचाई समुद्र तल से ~2300 से ~6000 मीटर तक है। राष्ट्रीय उद्यान में कई स्थायी धाराएँ, नाले, तालाब, झरने और ग्लेशियर हैं, जिसके परिणामस्वरूप पूरे वर्ष पानी की आपूर्ति पर्याप्त रहती है। राष्ट्रीय उद्यान क्षेत्र अदम्य है, जो अनेक बर्फ से ढकी चोटियों, ग्लेशियरों, पहाड़ों, अल्पाइन घास के मैदानों और झाड़ियों, उप–अल्पाइन वनों और शीतोष्ण वनों से परिपूर्ण है, जो राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण तत्व है। राष्ट्रीय उद्यान हाल ही में एक महत्वपूर्ण खोज के कारण सुर्खियों में आया – वन्यजीव संरक्षण विभाग, जम्मू–कश्मीर सरकार और उसके सहयोगियों के संयुक्त प्रयासों से मायावी और विश्व स्तर पर संकटग्रस्त हिम तेंदुए की समृद्ध आबादी का पता चला।

संरक्षण के लिए एक सफलता

जम्मू और कश्मीर सरकार के वन्यजीव संरक्षण विभाग के तहत एक समर्पित टीम द्वारा हाल ही में किए गए शोध ने पार्क के हिम तेंदुओं की आबादी के बारे में उत्साहजनक खबर का खुलासा किया। कैमरा ट्रैप, फील्ड सर्वे और उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों के संयोजन का उपयोग करते हुए, टीम ने क्षेत्र में इन राजसी शिकारियों की उल्लेखनीय संख्या की पहचान की। यह खोज संरक्षणवादियों और स्थानीय

समुदायों दोनों के लिए एक गेम–चेंजर है, क्योंकि यह वैश्विक रूप से कमजोर प्रजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण निवास स्थान के रूप में किश्तवाड़ हाई एल्टीट्यूड नेशनल पार्क के महत्व को उजागर करता है। सालों से, हिम तेंदुए जंगल में सबसे कम देखी जाने वाली बड़ी बिल्लियों में से एक रहे हैं, मुख्य रूप से उनकी मायावी प्रकृति, दूरस्थ निवास स्थान और छोटी आबादी के आकार के कारण। किश्तवाड़ में उनकी उपस्थिति न केवल पार्क के पारिस्थितिक महत्व को बढ़ाती है, बल्कि गहन संरक्षण प्रयासों की आवश्यकता पर भी जोर देती है ।

उच्च जैव विविधता वाली भूमि

हिम तेंदुओं के अलावा, (KHANP) में कई तरह की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। पार्क में कई तरह की वनस्पतियाँ और जीव–जंतु पाए जाते हैं, जिनमें हिमालयी भूरा भालू, तेंदुआ बिल्ली, कश्मीरी हिरण (हंगुल) और हिमालयी कस्तूरी मृग जैसी लुप्तप्राय प्रजातियाँ शामिल हैं। इसकी ऊँची चोटियाँ, गहरी घाटियाँ और घने जंगल इन जानवरों के लिए आदर्श शरणस्थल हैं, जो इसे एक पारिस्थितिक हॉटस्पॉट बनाते हैं। पार्क की ऊँचाई की विशाल सीमा, लगभग 2,300 मीटर से लेकर 6,000 मीटर से अधिक तक, आवासों की एक विस्तृत श्रृंखला बनाती है, जो अत्यधिक ठंड के अनुकूल प्रजातियों और समशीतोष्ण जंगलों में पाई जाने वाली प्रजातियों का समर्थन करती है। पारिस्थितिकी तंत्र की यह विविध श्रेणी न केवल वन्यजीवों की संपदा का पोषण करती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि पार्क क्षेत्र में प्रजातियों की आवाजाही के लिए एक महत्वपूर्ण गलियारे के रूप में कार्य करता है।

हिम तेंदुए और स्थानीय समुदाय

किश्तवाड़ में हिम तेंदुओं की मौजूदगी के बारे में पुष्टि किए गए फोटोग्राफिक साक्ष्य उत्साह और चुनौतियां दोनों लेकर आए हैं। एक ओर, इन बिल्लियों की मौजूदगी ने इकोटूरिज्म में वृद्धि की उम्मीदें जगाई हैं, जिससे स्थानीय समुदायों को आर्थिक रूप से लाभ उठाने के अवसर मिले हैं। हालाँकि, यह मानव–वन्यजीव संघर्षों की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है, खासकर चरवाहे समुदायों के लिए जिनके पशुधन इन छुपे हुए शिकारियों का शिकार हो सकते हैं।

इन संघर्षों को कम करना हिम तेंदुओं और क्षेत्र के आस–पास रहने वाले लोगों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध को बढ़ावा देने की कुंजी होगी। संरक्षण कार्यक्रमों को वन्यजीवों और स्थानीय समुदायों दोनों के कल्याण को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे स्थायी सह–अस्तित्व सुनिश्चित हो सके।

समुदाय–आधारित संरक्षण पहल, जो अन्य हिम तेंदुओं के आवासों में काम कर चुकी हैं, पशुधन की रक्षा और नुकसान के लिए मुआवजा प्रदान करने के लिए यहाँ शुरू की जा सकती हैं, जिससे लोगों की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव कम से कम हो।

भविष्य की ओर देखनाः अनुसंधान और संरक्षण

शोध दल के निष्कर्षो ने भविष्य के संरक्षण प्रयासों के लिए आशावाद को बढ़ावा दिया है। किश्तवाड़ में हिम तेंदुए इन जीवों की वैज्ञानिक समझ को गहरा करने के साथ–साथ वैश्विक संरक्षण रणनीतियों को सूचित करने का अवसर प्रदान करते हैं। निरंतर निगरानी, आवास संरक्षण प्रयासों के साथ मिलकर, यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक होगा कि यह नाजुक आबादी पनपे ।

किश्तवाड़ हाई एल्टीट्यूड नेशनल पार्क तेजी से उच्च ऊंचाई वाले संरक्षण के लिए एक केंद्र बिंदु बन रहा है। बड़ी संख्या में हिम तेंदुओं की खोज न केवल वन्यजीव संरक्षण की दुनिया में इसकी स्थिति को बढ़ाती है, बल्कि भविष्य के वैज्ञानिक अनुसंधान और पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन पहलों का मार्ग भी प्रशस्त करती है। संरक्षण, सामुदायिक भागीदारी और सतत विकास के बीच सही संतुलन के साथ, किश्तवाड़ हाई एल्टीट्यूड नेशनल पार्क पश्चिमी हिमालय में वन्यजीव संरक्षण के लिए एक मॉडल के रूप में उभर सकता है।

निष्कर्ष

किश्तवाड़ हाई एल्टीट्यूड नेशनल पार्क, अपनी नई पाई गई हिम तेंदुओं की आबादी के साथ, दुनिया भर के संरक्षणवादियों के लिए आशा और उत्साह प्रदान करता है।इस लुप्तप्राय प्रजाति के कुछ बचे हुए गढ़ों में से एक के रूप में, पार्क में सफल संरक्षण का प्रतीक बनने की क्षमता है, जो ग्रह पर सबसे मायावी और राजसी बड़ी बिल्लियों में से एक के भविष्य की रक्षा करता है।

शोधकर्ताओं, सरकार, स्थानीय समुदायों और संरक्षण संगठनों से जुड़े सहयोगी प्रयासों के माध्यम से, (KHANP) वन्यजीवों के लिए एक मॉडल राष्ट्रीय उद्यान के रूप में पनपना जारी रख सकता है, जबकि इस क्षेत्र को आर्थिक और पारिस्थितिक लाभ प्रदान कर सकता है। हिम तेंदुआ, जो कभी पहाड़ों में एक भूत था, अब जैव विविधता और संरक्षण दोनों के लिए एक उज्जवल भविष्य की आशा का प्रतीक है।

10/11/2022 1:10 PM

33F 01C 2023/10/20 17:45:56

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू

जम्मू और कश्मीर के सरकारी स्कूलों/रेलवे स्टेशनों में वाटर कूलर लगाने के लिए हडको सीएसआर परियोजना पर संक्षिप्त रिपोर्ट

हडको निदेशक मंडल ने 28.06.2024 को आयोजित अपनी 669वीं बैठक में अपने क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से सरकारी स्कूलों/अस्पतालों/रेलवे स्टेशनों में 3 चरण यूवी निस्पंदन (अधिमानतः इनबिल्ट) के साथ पीने के पानी के कूलर लगाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई थी। है, जिसमें हडको सीएसआर की ओर से प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय को 10 लाख रुपये की सहायता दी गई थी।

तदनुसार, निर्धारित विनिर्देशों के अनुसार, हडको जम्मू ने एक निविदा जारी किया गया था, और मौजूदा मानदंडों के अनुसार सबसे कम बोली लगाने वाले (एल 1) का चयन किया है। चयनित आइटम यूरेका फोर्ब्स (इनबिल्ट वाटर कूलर यूवी के साथ एक्वागार्ड पीने योग्य जल शोधन प्रणाली) था। सीएसआर के तहत उपरोक्त कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, हडको जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय ने नीचे दिए गए स्कूल और रेलवे स्टेशन में ग्यारह (11) वाटर कूलर स्थापित किए गए है।

क्रमांक	स्कूल/रेलवे स्टेशन का नाम	स्थापित वाटर कूलरों की संख्या
1.	पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नंबर 3 बीएसएफ कैंपस, पंथा चौक, श्रीनगर	01
2.	सरकारी मिडिल स्कूल, पटोली मोड़, शिव मंदिर के पास, जानीपुर, जम्मू	01
3.	स्टेशन अधीक्षक, मनवाल रेलवे स्टेशन, गांव खटहर के पास	01
4.	स्टेशन अधीक्षक, रेलवे स्टेशन, सांबा	01
5.	एसएसई पावर इंचार्ज, पीआरएस जम्मू रेलवे स्टेशन	01
6.	जम्मू तवी रेलवे स्टेशन, जम्मू	02
7.	श्री माता वैष्णो देवी, रेलवे स्टेशन कटरा	02
8.	एसएसई/पावर/एमसीटीएम, उधमपुर रेलवे स्टेशन	01
9.	स्टेशन अधीक्षक, कठुआ रेलवे स्टेशन, कठुआ	01

उपरोक्त के अनुसार इनबिल्ट 3 स्टेज यूवी फिल्टरेशन वाले 11 वाटर कूलर स्थापित किए गए हैं और उन्हें उनके संबंधित स्थानों पर सफलतापूर्वक चालू किया गया है। कुल व्यय 959200.00 रुपये हुआ है। उपरोक्त सभी स्थानों पर वाटर कूलर डीलर मेसर्स एसआरई कृष्णा ट्रेडिंग कंपनी द्वारा आपूर्ति, स्थापित और सफलतापूर्वक चालू किए गए हैं। इससे लगभग 1000 छात्रों और उपरोक्त रेलवे स्टेशनों से यात्रा करने वाले हजारों यात्रियों को शुद्ध पेयजल का लाभ मिलेगा। विक्रेता ने 3 साल की मुफ्त वारंटी/एएमसी की पेशकश की है।

****

विभिन्न स्थानों पर पेयजल कूलर की स्थापना की कुछ तस्वीरें

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नंबर 3, बीएसएफ कैंपस, पंथा चौक, श्रीनगर

श्री माता वैष्णो देवी रेलवे स्टेशन, कटरा, जम्मू (जम्मू-कश्मीर)

जम्मू तवी रेलवे स्टेशन, जम्मू

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि॰

(भारत सरकार का उपक्रम)

जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय, हडको भवन, ओ. बी.–8,

रेल हैड कम्पलैक्स, जम्मू–180012